TEACHERS OF BIHAR
The Change Makers

पद्यपंकज

बिहार के शिक्षकों द्वारा रचित

मार्च 2026 | अंक 19

बिहार दिवस विशेषांक

उन्नत बिहार उज्ज्वल बिहार

ई-पत्रिका तक पहुँचने हेतु QR कोड को स्कैन करें

मासिक कविता संग्रह

Reg. No. BR/2025/0487469

सरस्वती वंदना

या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता,
या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना।
या ब्रह्माच्युत शंकरप्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता,
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा॥

शुक्लां ब्रह्मविचार सार परमामाद्यां जगद्व्यापिनीं,
वीणा-पुस्तक-धारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम्।
हस्ते स्फटिकमालिकां विदधतीं पद्मासने संस्थिताम्,
वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम्॥

प्रधान संपादक की कलम से

उन्नत सदा बिहार को, कहता है इतिहास।
और रहे उज्ज्वल सदा, ऐसा करें प्रयास।।
है बिहार की श्रेष्ठता, जान रहा संसार।
वासी सभी बिहार के, करते गर्व अपार।।

मित्रों

हमारा बिहार अपनी स्थापना की ११४ वीं वर्षगांठ २२ से २४ मार्च तक पूरे धूमधाम के साथ एक उत्सव के रूप में पटना के ऐतिहासिक गाँधी मैदान में मनाया, जिसके हम सभी साक्षी बनें। जैसा कि हम जानते हैं, २२ मार्च १९१२ ई. को बिहार एक स्वतंत्र राज्य के रूप में अस्तित्व में आया था। जहाँ बिहार का गौरवशाली इतिहास सम्पूर्ण विश्व में ख्याति प्राप्त किया है वही आधुनिक काल में भी हमने अपने पुरुषार्थ का लोहा मनवाया है।

हमारा बिहार सदैव कला, संस्कृति, साहित्य, शौर्य और ज्ञान की पराकाष्ठा का बोध कराता रहा है, जिससे हम सभी बिहार वासी गौरवान्वित होते रहे हैं। हमारे श्रम और संकल्प से हमारा भविष्य सदैव उज्ज्वल रहेगा, ऐसा विश्वास है।

मित्रों ऐसे आनन्दानुभूति के क्षण में हमारे काव्य सृजक शिक्षकों की लेखनी ने अनेकानेक रंग उकेरे है, जिसे इस माह की पत्रिका में समेटकर आप सुधि पाठकों के समक्ष लाने का प्रयास किया हूँ। हमारा विश्वास है कि पत्रिका का यह अंक आप सबों के हृदय-तार को स्पंदित करने में अवश्य सफल होगी।

हम आपके अमूल्य सुझावों का भी स्वागत करते हैं और आशा रखते हैं कि आप अपनी प्रतिक्रिया से हमें अवगत अवश्य कराएँ, जिससे पत्रिका की गुणवत्ता में सुधार की जा सके और हमारे कलमकार शिक्षकों को प्रोत्साहन भी मिलें।

जय बिहार

हम भारत की शान हैं, कहते हमें बिहार।
सत्य अहिंसा सीख दें, प्रेमिल भाव निहार।।
जय बिहार के गान से, गूँज उठे आकाश।
जग को हम देते रहे, हर-पल ज्ञान तराश।।

राम किशोर पाठक

अस्वीकरण

- पद्यपंकज मासिक पत्रिका जिसे टीचर्स ऑफ़ बिहार के तरफ़ से प्रकाशित किया जा रहा है। इस प्रकाशन में बिहार के शिक्षकों द्वारा स्वरचित कवितायें प्रकाशित हैं।
- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुन: प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक का विक्रय नहीं किया जा सकता है। यह केवल पढ़ने के उद्देश्य से नि:शुल्क उपलब्ध है।
- यह कविता 'Teachers of Bihar' की संपत्ति है। इसे किसी भी प्रकाशक या अन्य लेखक द्वारा उपयोग नहीं किया जा सकता है।
- पत्रिका के सभी लेख, चित्र और सामग्री के अधिकार लेखक और प्रकाशक के पास सुरक्षित हैं।
- पत्रिका के किसी भाग को बिना पूर्व अनुमति के पुन: प्रकाशित या वितरित नहीं किया जा सकता है।

प्रकाशन सहयोग

प्रधान संपादक

राम किशोर पाठक
प्रधान शिक्षक, प्राथमिक विद्यालय कालीगंज उत्तर टोला, बिहटा

संपादक एवं डिजाइन

अनुपमा प्रियदर्शिनी
रा० उ० मध्य विद्यालय, दूधहन, रघुनाथपर, सिवान

तकनीकी सहयोग

ई o शिवेंद्र प्रकाश सुमन

नेतृत्वकर्ता

शिव कुमार
उत्क्रमित मध्य विद्यालय
नारायणपुर, बिक्रम, पटना

अनुक्रमणिका

रचना	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
सुनो बिहार	रुचिका	10
उन्नत बिहार उज्ज्वल बिहार	अमरनाथ त्रिवेदी	11
हम बिहार हैं	संजीत कुमार निगम	12
लोकतंत्र की जननी बिहार	ब्यूटी कुमारी	13
हमारा बिहार	भवानन्द सिंह	14
अपना श्रेष्ठ बिहार है	रामकिशोर पाठक	15
बिहार दिवस	डॉ. स्नेहलता द्विवेदी 'आर्या'	16
बिहार के विकास	कार्तिक कुमार	17
हमारा बिहार	आशीष अंबर	18
मेरा बिहार	बिंदू अग्रवाल	19
बिहार हूं मैं	अर्जुन केसरी	20
मेरा बिहार	मुन्नी कुमारी	21
बुद्ध की पावन धरा	रामकिशोर पाठक	22
मैं हूं गौरवशाली बिहार	मनु कुमारी	23

शुभकामना संदेश

"पद्यपंकज" जैसी पत्रिका शिक्षकों की उस रचनात्मकता और सोच को सामने लाती है, जो अक्सर उनके पाठ्यक्रम और जिम्मेदारियों के बीच छिपी रह जाती है । यह जानकर बहुत खुशी हुई कि हमारे शिक्षकगण, अपनी व्यस्त दिनचर्या के बीच भी साहित्य और लेखन के प्रति इतनी संवेदनशीलता और समर्पण दिखा रहे हैं।

यह पत्रिका सिर्फ शब्दों का संग्रह नहीं है, बल्कि यह एक जीवंत दस्तावेज़ है, जो शिक्षा, विचार और भावनाओं के मेल से बना है। इसमें छपी हर रचना, एक शिक्षक के अनुभव, उसकी सोच और समाज के प्रति उसकी जिम्मेदारी को दर्शाती है।

"पद्यपंकज" की पूरी टीम, संपादक मंडल और इसमें सहयोग देने वाले सभी शिक्षकों को मेरी ढेरों शुभकामनाएँ। उम्मीद करती हूँ कि यह प्रयास यूँ ही आगे बढ़ता रहे और नई पीढ़ी को एक जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए प्रेरित करता रहे।

13/04/25

डॉ. रश्मि प्रभा
संयुक्त निदेशक
राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद, बिहार

शुभकामना संदेश

"पद्यपंकज" जैसी रचनात्मक पहल यह सिद्ध करती है कि शिक्षक न केवल ज्ञान के दीप प्रज्वलित करते हैं, बल्कि समाज की सांस्कृतिक चेतना को भी जीवंत बनाए रखते हैं। यह पत्रिका उन भावनाओं, विचारों और अनुभूतियों की अभिव्यक्ति है, जो शिक्षकों के हृदय में पलती हैं और साहित्य के रूप में साकार होती हैं।

ऐसी पत्रिकाएँ शिक्षा को केवल पुस्तकों की परिधि में नहीं बाँधतीं, बल्कि सोच, अभिव्यक्ति और संवेदना को विस्तार देती हैं। यह प्रशंसनीय है कि हमारे शिक्षक अपनी व्यस्त दिनचर्या के साथ-साथ सृजनात्मक साहित्य के माध्यम से समाज को दिशा देने का कार्य कर रहे हैं।

मैं "पद्यपंकज" पत्रिका से जुड़े सभी शिक्षकों, संपादक मंडल और रचनाकारों को इस पुनीत कार्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ। यह पत्रिका निरंतर पल्लवित और पुष्पित होती रहे, यही मेरी कामना है।

डॉ. स्नेहाशीष दास
विभागाध्यक्ष,
विद्यालयी शिक्षा विभाग
राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद, बिहार

सुनो बिहार

सुनो बिहार,
तुझसे है मेरा अटूट नाता
तुझसे ही पाया मैंने अमूल्य संस्कार
है किस्मत की मुझ पर मेहरबानी
तेरी मिट्टी में पले बढ़े
नहीं रहे मन में कोई भी तकरार।
सुनो बिहार,
तेरा गौरव अपने कर्मों से बढ़ाया,
अपनी संस्कृति विदेशों में भी निभाया,
शिक्षा के क्षेत्र में निरंतर प्रयासरत हो
विश्वपटल पर नाम बढ़ाकर
नालन्दा का सम्मान निरन्तर बचाया।

सुनो बिहार,
देश विदेश के किसी कोने में घूम आएं
सुकून बस तेरे पास ही पाएं
चाहे मिले कितनी असुविधा
नहीं रहे मन में कोई भी दुविधा
तू है मेरा असली पनाहगाह
तू ही है मेरे कामयाबियों की राह।
सुनो बिहार,
तेरी हो सदा ही जय-जयकार
भले ही कोई कुछ भी कहे
तुझसे ही मेरा अभिमान
तू ही मेरा गौरवशाली बिहार।

रुचिका
राजकीय प्राथमिक विद्यालय कुरमौली
गुठनी सिवान बिहार

उन्नत बिहार उज्ज्वल बिहार

उन्नत बिहार के उज्ज्वल भविष्य की हम ज़ब-ज़ब कल्पना करते हैं।
तब खुशी से मन झूम उठता ज़ब लोग हिल-मिल भी रहते हैं ।।
उन्नत बिहार के साँचे में जब हम सब ढलते जाएँगे।
इसका वैभव होगा अनंत जब हम प्रेम की राह अपनाएँगे ।।
कोशिश ही तकदीर बने इस भव्य मंदिर को सजाने में।
इसमें ही अपना पुरुषार्थ लगे इस पावन मंदिर को चमकाने में ।।
समुन्नत होगा हर कण-कण में क्षण-क्षण में प्रीति जगाएँगे।
मानव-मानव में कहीं भेद नहीं किसी के प्रति दुश्मनी भाव न लाएँगे ।।
सब बच्चे होंगे होनहार सबल बिहार की यश गाथा ही गाएँगे।
सपने में न तनिक भी अभिमान झलकेगा हम भारत का भाग्य बढ़ाएँगे ।।
शुभ कर्मों से हम प्रेरित होते सभी युवा हमारे कामिल हैं।
अपने प्रान्त के नवोत्कर्ष में सचमुच ही सब शामिल हैं ।।
फौज खड़ी हो जहाँ युवाओं की उसे कौन कभी रोक सकता है ?
जहाँ की धरती है बलिदानों की उसे कहो कौन टोक सकता है ?
उन्नत बिहार हमारा है हम उज्ज्वल करके सबको दिखलाएँगे।
हर कण-कण में हर रज-रज में इसकी शान सभी बतलाएँगे।।
सदा से पढ़े लिखों का है बिहार इसे उन्नत करते जाएँगे।
जीवन का मर्म इसी में हैं इसे उज्ज्वल सदा बनाएँगे ।।
खेल कूद में शीर्ष पर होगा, अंतरिक्ष उड़ान की शान में।
पढ़े लिखे तब और भी होंगे नव बिहार की तान में ।।
महकेगा पूरा बिहार ही आतिथ्य प्रेम की डोर से।
चमकेगा पूरा बिहार ही सुख समृद्धि की जोर से ।।

अमरनाथ त्रिवेदी
पूर्व प्रधानाध्यापक
उत्क्रमित उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बैंगरा
जिला मुजफ्फरपुर

हम बिहार हैं

हम भक्त प्रह्लाद की जन्मभूमि हैं,
हम महादानी कर्ण की कर्मभूमि हैं।
हम वह पावन धरा हैं जहाँ सूर्य स्वयं पधारे,
जहाँ विद्यापति के गृह उगना बनकर शिव शंकर गुजारे।
हम भगवान राम की ज्ञानभूमि हैं,
हम विश्वामित्र की तपोभूमि हैं।
हिरण्यकशिपु-वध की गाथा हमारी पहचान है,
नरसिंह अवतार का दिव्य प्राकट्य हमारा मान है।
हम माता सीता की पावन मिथिला-नगरी हैं,
मधुबनी की विश्वविख्यात कला की डगरी हैं।
हम चाणक्य की राजनीति का अनुपम शौर्य हैं,
हम चंद्रगुप्त मौर्य के अखंड भारत का गौरव-गौर्य हैं।
हमने विश्व को लोकतंत्र का प्रथम मंत्र दिया,
जिस तंत्र को जग ने आदर सहित स्वीकार किया।
हम शून्य के दाता हैं, ज्ञान के संवाहक हैं,
हम बुद्ध की करुणा के अमर प्रकाशक हैं।
हम गुरु गोविंद सिंह की जन्मस्थली महान हैं,
हम गंगा की अविरल धारा का पावन गान हैं।
हम महावीर की धर्मधरा, अशोक की कीर्ति-शान हैं,
हम बिस्मिल्ला की शहनाई, शेरशाह का बलिदान हैं।
हम नालंदा का विश्वविख्यात विद्यापीठ हैं,
हम तक्षशिला का प्राचीन ज्ञान-दीप्त हैं।
हम रेणु की आंचलिक चेतना की पहचान हैं,
हम दिनकर की ओजस्वी कविता की जान हैं।
हमने देश को प्रथम राष्ट्रपति दिया,
सत्याग्रह से इतिहास को नई दिशा दिया।
हम जेपी के संकल्प, माँझी के परिश्रम का मिसाल हैं,
हाँ, हम बिहार हैं-हम ही बिहार हैं।

संजीत कुमार निगम
प्राथमिक विद्यालय आदिवासी टोला
मधुरा तिरसकुंड फारबिसगंज

लोकतंत्र की जननी बिहार

चाणक्य का ज्ञान चंद्रगुप्त की पहचान, बुद्ध की तपस्या महावीर का अवतार,
जनक नंदिनी सीता का श्रृंगार, लोकतंत्र की जननी बिहार।
भारत का राष्ट्रीय प्रतीक,
सम्राट अशोक का कृति चिन्ह,
गांधी की कर्मभूमि चंपारण,
वीर कुंवर सिंह की ललकार,
लोकतंत्र की जननी बिहार।
ब्रह्मवादिनी मैत्रेयी का वेद ज्ञान,
आर्यभट्ट का आविष्कार,
विद्यापति का संसार,
राष्ट्रकवि दिनकर की हुंकार,
लोकतंत्र की जननी बिहार।
छठ महापर्व का त्यौहार,
लिट्टी चोखा का बाहर,
मिथिला पेंटिंग मंजूषा कला,
भाषाओं का समाहार,
लोकतंत्र की जननी बिहार।
बिस्मिल्लाह की शहनाई,
राजेंद्र प्रसाद का मेधा,
नालंदा का ज्ञान पुंज,
गंगा की पावन जलधार,
लोकतंत्र की जननी बिहार।
सोनपुर का पशु मेला,
अतिथि का होता सत्कार,
फाग कजरी की झंकार,
मां भारती के गले का हार,
लोकतंत्र की जननी बिहार।

ब्यूटी कुमारी
दलसिंहसराय,
समस्तीपुर

हमारा बिहार

बिहार दिवस आज,
सभी लोग मनाते हैं,
इनकी माटी की खुश्बू, विश्व में फैलाइए।

लिच्छवी का गणतंत्र,
था प्रथम लोकतंत्र,
यह बात लोगों को भी, आज समझाइए।

नालंदा, विक्रमशिला,
की ज्ञान गंगा से सभी,
विभूषित आज हम, सबको बताइए।

भगवान महावीर,
व बुद्ध का उपदेश,
प्रेरणा के श्रोत हैं ये,जन को जगाइए।

भवानंद सिंह(शिक्षक)
मध्य विद्यालय मधुलता
रानीगंज, अररिया

अपना श्रेष्ठ बिहार है

युगों-युगों से गौरवशाली, अपना श्रेष्ठ बिहार है।
तपोभूमि यह गौतम जी की, सतत ज्ञान भंडार है।।

जनक दुलारी सुकुमारी की, जन्मभूमि यह ही रही।
विश्वामित्र तपस्वी की भी, कर्म भूमि यह ही रही।।
ज्ञान केन्द्र नालंदा का तो, चर्चा चारों ओर है।
रहा विश्व गुरु भारत बनकर, लाती नित नव भोर है।।
गंगा इससे होकर गुजरी, हुई धरा गुलजार है।
युगों-युगों से गौरवशाली, अपना श्रेष्ठ बिहार है।।०१।।

गंगा कोशी गंडक पुनपुन, नदियों की धारा बहे।
सोन घाघरा बागमती भी, कल-कल गायन कर रहे।।
दलहन तिलहन मक्का गेहूँ, चावल खेती हो रही।
हरा भरा भू उपवन जैसा, मोह सभी में बो रही।।
पर्वत में जो राह निकाले, बसा यहाँ किरदार है।
युगों-युगों से गौरवशाली, अपना श्रेष्ठ बिहार है।।०२।।

आर्यभट्ट की पावन धरती, और अशोक महान की।
आदिकाल से गाथा गाती, भूमि यही श्रमदान की।।
दिनकर ने समझाया जग को, सबकी सृष्टि बिहार में।
मगही मैथिल भोजपुरी का, गान सकल संसार में।।
योगदान अगणित है अपना, सभी जगह भरमार है।
युगों-युगों से गौरवशाली, अपना श्रेष्ठ बिहार है।।०३।।

राम किशोर पाठक
प्राथमिक विद्यालय कालीगंज उत्तर टोला,
बिहटा, पटना, बिहार

बिहार दिवस

आओ प्यारे तुम्हें कराऊँ दर्शन मैं बिहार की,
यह मिट्टी है ज्ञान शौर्य की शांति की, सद्भाव की।
श्रमशक्ति का ओज रगों में प्रतिभा के सम्मान की,
विजयी जीवन देश को अर्पण करते पूत महान की।
चक्रवर्ती अशोक यहाँ थे चक्र तिरंगा शान की,
शेरशाह के ग्रैंड ट्रैंक और शासन सत्य महान की।
चंद्रगुप्त कौटिल्य गुरु की दर्शन नीति ज्ञान की,
आर्यभट्ट वराहमिहिर की धरती के स्वाभिमान की।
शून्य ज्ञान अंको के खेल और ज्योतिष के आवतार की,
पुण्यभूमि आयुर्वेद की धरती धर्मनीति प्रज्ञान की।
सुश्रुत शल्य चिकित्सा दाता बैद्यराज गुणधम की,
गौरवगाथा क्या बतलाऊँ जय जय जय बिहार की।
राम के ज्ञानस्थली बक्सर विश्वामित्र महान की,
लिट्टी चोखा दहीबड़ा मनेरी लड्डू स्वाद की।
सबमें सबका सर्वसुखी हों समरस सभ्य समाज की,
गंगा, गंडक ,सोन, चंपा, कर्मनाशिनी धाम की।
विक्रमशिला और नालंदा के ज्ञान और प्रकाश की ,
पाटलिपुत्र की पुण्यभूमि की, गौतम बुद्ध महान की।

बुद्ध के ज्ञान और तपोभूमि की गयाभूमि गुणगान की,
गोविंदसिंह अवतरण सुखद की नानक के सद्ज्ञान की।
महावीर थे अति तपस्वी जैन दर्शन ज्ञान की,
अध्यात्म की पुण्य भूमि यह जय जय जय बिहार की।
मोक्ष भूमि तर्पण की देखो, विष्णुपाद पावन धाम की,
सूर्य के मंदिर देव धाम की, प्रेम परस्पर पान की।
पान मखान पाग और मेवा मिथिला अद्भुत धाम की,
मण्डन धाम महिषी का तोता वेद पढ़ावत ज्ञान की।
दही चूड़ा गुड़ संग पावत मगही पान सम्मान की,
भोजपुरी से ओज सहज सम मैथिली ,मगही तान की।
अंगिका , बज्जिका मिलें परस्पर सुमधुर सुंदर गान की।
उर्दू के मिठास और हिंदी के स्वाभिमान की।
बोली भाषा विविध परंतु प्रेम रश्मि गुण खान की,
कोकिला धुन ठुमरी और सोहर मिथिला पेंटिग ज्ञान की।
जयप्रकाश की जय जय बोलो जय बोलो बिहार की,
बी.पी.मंडल अजब मसीहा , राजेन्द्र बाबू के शान की।
दिनकर, रेणु, द्विज, मंड़ल, बशिष्ठ नारायण के दुर्लभ ज्ञान की,
दिल में बसता देश हमारा जय जय जय बिहार की।

डॉ. स्नेहलता द्विवेदी "आर्या"
उत्क्रमित कन्या मध्य विद्यालय शरीफगंज
कटिहार

बिहार के विकास

बिहार की धरती, ज्ञान की खान,
इतिहास में इसका ऊँचा मान।
नालंदा की गूँज आज भी है,
ज्ञान का दीप यहाँ सदा प्राण।
गाँव-गाँव में सड़कें आईं,
हर घर तक अब रोशनी छाई।
शिक्षा, स्वास्थ्य में बढ़ते कदम,
नई दिशा ने राह दिखाई।
खेती में आई नई तकनीक,
हरियाली से सजी हर एक।
किसान बना अब आत्मनिर्भर,
मेहनत से बदली उसकी रेख।
उद्योगों का बढ़ता विस्तार,
युवाओं को मिलता रोजगार।
नए सपनों की उड़ान लिए,
बढ़ रहा बिहार हर बार।
बेटी-बेटा साथ बढ़ें अब,
शिक्षा का फैला है उजियार।
नव निर्माण की राह पे चलकर,
बन रहा विकसित बिहार।

कार्तिक कुमार
मध्य विद्यालय कटरमाला, गोरौल, वैशाली

हमारा बिहार

हमारा बिहार सबसे महान है,
इसकी सभ्यता का हमें अभिमान है।
बुद्ध की धरती इसका परित्राण है,
चन्द्रगुप्त, चाणक्य, अशोक जिनकी पहचान है।

जहाँ बहती गंगा की अविरल धारा है,
हिमालय सुरक्षा करता हमारा है।
लिट्टी-चोखा की स्वाद निराली है,
धरा जहाँ की उन्नत और हरियाली है।

बिहार संस्कारों का ज्ञाता हैं,
कर्म ही जिसका भाग्य विधाता है।
छठ पर्व की महिमा अपरम्पार है,
सबको गले लगाना हमारा संस्कार है।

इतिहास जहाँ की युगों पुरानी है,
मेधा बिहार की जग ने भी मानी है।
नवाचार और उन्नति देश ने भी पहचानी है।,
पाटलिपुत्र इसकी पुरातन राजधानी है।

मिथिला चित्रकला पहचान दिलाती है,
मैथिली, मगही और भोजपुरी भाषा बोली जाती है।
त्यौहारों का लगता यहाँ मेला है,
संस्कृति और सभ्यता यहाँ का कितना अलबेला है।

आशीष अम्बर
उत्क्रमित मध्य विद्यालय धनुषी
प्रखंड – केवटी
जिला – दरभंगा
बिहार

मेरा बिहार

यह बिहार की पावन भूमि,
दामन भारत माँ का है।
करुणा बोध मिली जग को,
यह वरदान यहाँ का है।

भूमि वीर कुंवर सिंह कि यह,
विश्वामित्र का आश्रम है।
जन्मे जहाँ वीर बजरंगी,
माँ सीता का आँगन है।

जहाँ गुजारा पांडव ने,
बारह वर्षों का बनवास।
माखन चोर के रथ का पहिया,
अभी तलक है जिसके पास।

जहाँ की लीची और आम का,
डंका जग में बोल रहा।
जग में मगही पान जहाँ का,
मुँह में रस है घोल रहा।

नालंदा सा ज्ञानपीठ है,
जिससे जग में उजियारा है।
धन्य-धन्य यह पावन भूमि,
यह बिहार हमारा है।

बिंदु अग्रवाल
शिक्षिका
मध्य विद्यालय गलगलिया

बिहार हूं मैं

छठ पूजा का ठेकुआ हूं, स्वाद से भरपूर
लिट्टी चोखा आचार हूं मैं
शिक्षक नवाचार हूं मैं
अजी हां बिहार हूं मैं !!
चाणक्य की नीति हूं , आर्यभट्ट का आविष्कार हूं मैं।
महावीर की तपस्या हूं , बुद्ध का अवतार हूं मैं।
अजी हां ! बिहार हूं मैं।
सीता की भूमि हूं, विद्यापति का संसार हूं मैं।
जनक की नगरी हूं, मां गंगा का श्रंगार हूं मैं।।
अजी हां ! बिहार हूं मैं।
चंद्रगुप्त का साहस हूं, अशोक की तलवार हूं मैं।
बिंदुसार का शासन हूं , मगध का आकार हूं मैं।
अजी हां ! बिहार हूं मैं।
दिनकर की कविता हूं, रेणु का सार हूं मैं।
नालंदा का ज्ञान हूं, पर्वत मन्दार हूं मैं।
अजी हां ! बिहार हूं मैं।
वाल्मिकी की रामायण हूं, मिथिला का संस्कार हूं मैं।
पाणिनी का व्याकरण हूं, ज्ञान का भण्डार हूं मैं।।
अजी हां ! बिहार हूं मैं।
राजेन्द्र का सपना हूं, गांधी की हुंकार हूं मैं।
गोविंद सिंह का तेज हूं, कुंवर सिंह की ललकार हूं मैं।।
अजी हां ! बिहार हूं मैं।

अर्जुन केशरी
प्राथमिक विद्यालय मिर्धाचक आदिवासी टोला
कहलगांव, भागलपुर

मेरा बिहार

हाँ यह मेरा बिहार है,
हाँ यह अपना बिहार है।
इतिहास जिसके कदम चूमे,
हाँ वह मेरा बिहार है।
जहाँ बुद्ध, महावीर का त्याग छाया,
सत्य-अहिंसा का संदेश लाया।
अशोक की धर्म शिलालेख भाया,
वीरों की गौरव गाथा गाया।
हाँ यह मेरा बिहार है।
जहाँ चाणाक्य की नीति जन्मी,
शिक्षा और ज्ञान की ज्योति पनपी।
नालंदा, विक्रमशिला की शिक्षा फली,
यही से भारत की पहचान बनी।
हाँ यह मेरा बिहार है।
जहाँ दिनकर की कविता, रेणु का सार है,
शारदा सिन्हा की लोकगीत, विद्यापति का संसार है।
प्रथम राष्ट्रपति राजेन्द्र, जेपी की हुंकार हैं,
माँ गंगा की पावन धारा, कुंवर सिंह की तलवार है।
हाँ यह मेरा बिहार है।
जहाँ आर्यभट्ट ने विश्व को शून्य सिखलाया,
वाल्मीकि की रामायण सत्य मार्ग दिखाया।
मिथिला पेंटिंग को देश-विदेशों में फैलाया,
अपनी मानवता का पहचान बनाया।
हाँ यह मेरा बिहार है।
हाँ यह अपना बिहार है।

मुन्नी कुमारी
प्राथमिक विद्यालय मोहनपुर मुशहरी
प्रखण्ड- झंझारपुर, मधुबनी

बुद्ध की पावन धरा

बुद्ध की पावन धरा।
दिव्यता से है भरा।।
है रमा जन्मस्थली।
बोल मगही मैथिली।।
अंगिका सह भोजपुरी।
शिल्क है भागलपुरी।।
ज्ञान से हर-पल हरा।
बुद्ध की पावन धरा।।०१।।

भूमि उर्वर दलदली।
पर्व छठ दीपावली।।
राष्ट्र कवि दिनकर यहाँ।
मौर्य का बस्ती जहाँ।।
ख्याति नालंदा वरा।
बुद्ध की पावन धरा।।०२।।

क्या बिहारी शान है।
विश्व में पहचान है।।
खेल में अव्वल रहे।
मेल सबसे कर कहे।।
याद रखना बस जरा।
बुद्ध की पावन धरा।।०३।।

राम किशोर पाठक
सियारामपुर, पालीगंज, पटना, बिहार।

मैं हूं गौरवशाली बिहार

मैं हूँ गौरवशाली बिहार

मैं हूँ गौरवशाली बिहार।
मैं भारत का हूँ कंठहार,
मैं गौतम बुद्ध का अष्टांगिक मार्ग,
मैं महावीर का पंचशील,
मैं बापू के सत्य अहिंसा का,
खिलता हुआ गुलजार हूँ।
मैं गौरवशाली बिहार हूँ।

त्योहारों में मैं दीवाली हूँ।
ज्ञानदीप से तिमिर भगाकर,
होली, छठ, और खिचड़ी,
दशहरा, सामा चकेवा, कोजगरा,
जितिया, बटसावित्रि, देव उठौन,
के रूप में मैं संस्कृति का, पालनहार हूँ।
मैं गौरवशाली बिहार हूँ।

कवियों में मैं दिनकर, रेणु,
रामवृक्ष, नागार्जुन हूँ।
आरसी, नेपाली, जगमग गीता श्री,
के मन के सुन्दर भावों का तार हूँ।
मैं शारदा के मधुर स्वरों का और,
बिस्मिल्लाह खान के शहनाई की गुंजार हूँ।
मैं गौरवशाली बिहार हूँ।

मैं कवि विद्यापति का भक्ति भाव,
जिसके सेवक स्वयं शिवजी हुए।
उगना रूप में आकर वो,
विद्यापति के चरण पड़े।
मैं बेटी सीता मैया जैसी,
पाहून अवध कुमार हूं।
मैं गौरवशाली बिहार हूं।

मैं अंगिका, वज्जिका, भोजपुरी,
मगही, मैथिली भाषा हूँ।
प्रेम भाव से साथ में चलकर,
अतिथि को देवता समझकर,
वसुधैव कुटुम्बकम की राह पर चलकर,
सबका करता आदर सत्कार हूं
मैं गौरवशाली बिहार हूं।

यहां प्रतिभा की कमी नहीं ,
कितने आई. ए. एस. पीसीएस
डॉक्टर, इंजीनियर हमने जन्म दिए।
बेटियां बेटों से कम नहीं यहाँ,
कितनी बेटियों ने रिकॉर्ड तोड़े,।
मैं शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, सड़क का ,
प्रदर्शन शानदार हूं।
मैं गौरवशाली बिहार हूँ।

मैं "श्रीकृष्ण" सा महान विभूति हूँ।
और ज्ञान का अनुभूति हूँ।
मैं आर्यभट्ट सा गणितज्ञ हूँ।
राजेन्द्र प्रसाद सा राजनीतिज्ञ हूँ।
मैं अशोक स्तम्भ के शेर की दहाड़ हूँ।
मैं गुरु गोविंद सिंह का तलवार हूँ।
मैं अविचल अडिग बिहार हूँ ,
मैं गौरवशाली बिहार हूँ।

मैं मगध सा साम्राज्य हूँ।
मैं भारत का सरताज हूँ।
मैं शिक्षा का केन्द्र विक्रमशिला हूँ।
मैं सोनपुर का मेला हूँ।
मैं कोशी का की विनाश लीला हूँ।
मैं पटना का चिड़िया घर,
और संजय गांधी जैविक उद्यान हूँ।
मैं गौरवशाली बिहार हूँ।

मैं चाणक्य सा ज्ञानी शिक्षक हूँ।
मैं कई रूप में संरक्षक हूँ।
मैं वैशाली सा इतिहास हूँ।
मैं मिथिला की मिठास हूँ।
मैं मकरसंक्रांति का दही चूड़ा हूँ।
मैं जुड़शीतल बैसाखी हूँ।
मैं व्यंजन लिट्टी चोखा हूँ।
करता नहीं किसी से धोखा हूँ।
मैं लोक आस्था, परंपरा और।
संस्कृति का एक सुंदर संसार हूँ।
मैं गौरवशाली बिहार हूँ।

मैं देश का छोटा गागर हूँ।
मैं आध्यात्मिक ज्ञान का सागर हूँ।
मैं गुरू मैं हीं दास हूँ।
पूरी करता सबकी आस हूँ।
मैं बाह्य आडम्बर पर करता प्रहार हूँ।
मैं सदाचार को मानता "चमत्कार" हूँ।
मैं गौरवशाली बिहार हूँ।

मैं धन धान्य से हूँ भरा,
और धरती का रंग है सदा हरा।
मैं सात शहीदों का रक्त हूँ,
मैं लोकनायक जय प्रकाश सा देशभक्त हूँ।
मैं बोधगया में सिद्धि हूँ।
मैं गौतम का पावन "विहार" हूँ।
मैं बसंत का होली त्योहार हूँ।
मैं गौरवशाली बिहार हूँ।
मैं गौरवशाली बिहार हूँ।

जय बिहार।

मनु कुमारी, विशिष्ट शिक्षिका, प्राथमिक विद्यालय दीपनगर बिचारी, राघोपुर, सुपौल,

बच्चों के द्वारा बनाए गए पेंटिंग

पद्यपंकज

आपके द्वारा दिया गया अमूल्य समय हमारे लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। यदि आपके पास कोई सुझाव हो, तो कृपया हमें अवगत कराएं, जिससे हम और भी बेहतर कार्य कर सकें।

Teachers Of Bihar

क्या आप बिहार के सरकारी विद्यालय के शिक्षक हैं ? आपको अपनी रचना भी प्रकाशित करनी है ? नीचे दिए गए वेबसाइट, ईमेल एवं व्हाट्सप्प के माध्यम से जुड़े |

writers.teachersofbihar@gmail.com
padyapankaj.teachersofbihar.org
+91 7250818080 | +91 9650233010

Reg. No. BR/2025/0487469

पद्यपंकज के सभी अंकों को पढ़ने के लिए QR Code को स्कैन करें